गोविभा

गोविज्ञान भारती का
संदेशवाहक मासिक

वर्ष : 10 ● अंक : 10 | सम्पादक : नरेन्द्र दुबे, डॉ. पुष्पेन्द्र दुबे

20 जनवरी, 2013

भारत-पाकिस्तान संघ

- विनोबा

हम जब कश्मीर में घूम रहे थे तो हमने बहुत देखा और बहुत सुना।...राजनीति तो मैं जानता नहीं, न जानने की इच्छा रहती है, लेकिन मेरे मन में सहज आया कि अगर कहीं लूज अर्थ में भारत और पाकिस्तान का कान्फेडेरेशन संघ बन जाए तो मसले हल हो सकते हैं।

हिंदुस्तान की आजादी के साथ उसके दो विभाग हुए। जिस ढंग से वे हुए, उस ढंग से उसमें से लाभ नहीं निकला। बल्कि अभी तक का जो अनुभव है, उसने दिखा दिया है कि उसमें से समस्याएं ही पैदा हुई हैं। कुछ समस्याओं का परिहार होगा, इस आशा से राजनीतिक माहिरों ने वह किया था। लेकिन अनुभव से दिखाई दिया कि मसले हल नहीं हुए, बल्कि मसले पैदा हुए। मैंने कहा कि मुझे राजनीति में सूझ नहीं है। लेकिन फिर भी मन में आया कि ये जो दो टुकड़े करके मसले हल करने का सोचा जाता है, उससे दुनिया के कोई मसले हल नहीं होंगे। न भारत के न दुनिया के। राजनीतिक लोगों ने वैसा किया, लेकिन मसला हल नहीं हुआ। अब हम यह तो नहीं सोच सकते कि पिछले पंद्रह-बीस साल के अंदर-अंदर जो यह घटना हुई, उसको उलट करके एक अखण्ड देश बनायें, यह नहीं बन सकता है। भविष्य में क्या होगा, यह तो मालूम नहीं। हो सकता है जैसे कच्छ का रण बना है, इस तरह का सारा भारत-पाकिस्तान एक रण ही बन जाय। बड़ा भूकम्प हो जाए। तो यह जो सारा मानव-समूह है, पृथ्वी पर भार हो रहा है, वह नष्ट हो जाए, कहीं हिंदुस्तान-पाकिस्तान रण हो जाय तो बहुत से मसले हल हो जाएंगे। इसलिए भविष्य की चिंता मैं नहीं करता। लेकिन अभी हम यह नहीं सोच सकते कि ये दोनों देश मिलकर एक बन जाएं वह व्यावहारिक नीति नहीं होगी। लेकिन दोनों का मिल-जुलकर संयुक्त संस्थान- कान्फेडेरेशन हो तो अच्छा रहेगा, ऐसा विचार आया।...दोनों देशों का हार्दिक सम्मेलन हो - इमोशनल इंटीग्रेशन हो। कई दफा ऐसा भी होता है कि जो कसकर लड़ते हैं, उन्हीं में बनती है। मानव का मन बड़ा अजीब है। मानव-शास्त्र का बहुत अध्ययन हुआ है। लेकिन बहुत होना बाकी है। कभी-कभी लड़ाई के बाद अकल आती है। सवाल है कि अकल आये।

मुझे यह कहना चाहिए कि अकल आज इंग्लैंड के पास है, वह अकल हममें नहीं है। एक जमाने में कहा जाता था कि इंग्लैंड की नीति तोड़ने की है और बात सही भी दीखती थी। लेकिन इन दिनों इंग्लैंड का रवैया जोड़ने का दीखता है, और वह कोशिश करता है कि मामला न बिगड़े। इधर अमेरिका के साथ वह पूरा संबंध रखना चाहता है और चीन के साथ भी व्यापार करना चाहता है। भारत के साथ भी मैत्री रखना चाहता है और पाकिस्तान के साथ भी अच्छे संबंध रखना चाहता है। कह सकते हैं कि उसमें भी उसका कोई व्यापार आदि का स्वार्थ हो, लेकिन अगर वैसा स्वार्थ हो तो भी खराब बात नहीं, क्योंकि वह जोड़ने का काम कर रहा है। तो इस वक्त इंग्लैंड शांति का काम कर रहा है। दे प्रभु उनको यश, मैं तो चाहूंगा।

मेरे मन में किसी भी जमात का पाप मेरा पाप है और किसी भी जमात का पुण्य मेरा पुण्य है। यह भेद अपने मन में मैं नहीं देख रहा कि इंग्लैंड के गौरव से मेरा अगौरव होगा। उसका गौरव है तो मेरा भी गौरव है। लेकिन मैंने कान्फेडेरेशन की बात सामने रखी है। राजनैतिक लोगों का तरीका यह है कि वे ऐसी बातें एकदम सामने नहीं रखते। यह भी एक तरीका हो सकता है सोचने का, लेकिन हमारा वह नहीं है। इसलिए आज भी मेरा मानना यही है। और इसीलिए कच्छ के रण की समस्या मुझे बहुत छोटी-सी दीखती है।

(तूफान का संकेत से साभार)

सम्पादकीय

गोरक्षा सत्याग्रह के तीस साल

मुम्बई के देवनार कत्लखाने के सामने गोवंश हत्याबंदी के लिए कानून बनाने की मांग को लेकर किए जा रहे सत्याग्रह को तीस साल हो गए। स्वराज्य मिलने के बाद सभी धर्मो, जातियों, पक्षों और विचारों के लोगों ने सर्वसम्मति से संविधान की धारा 48 में गोवंश को नीति निर्देशक तत्वों में स्थान दिया। सन् 1947 में ही भारत सरकार ने सर दातारसिंह की अध्यक्षता में पशु संरक्षण एवं संवर्द्धन के विशेषज्ञों की समिति नियुक्त की थी। इस समिति ने पूरे देश में दो वर्ष में सम्पूर्ण गोहत्या बंदी की सिफारिश की थी। संविधान के निर्देशानुसार और समिति की सिफारिशों को ध्यान में रखकर उत्तरप्रदेश, मध्यप्रदेश, राजस्थान और बिहार में संपूर्ण गोवंश हत्याबंदी कानून बनाए गए लेकिन अन्य राज्य सरकारों ने इस दिशा में कोई पहल नहीं की। सन् 1951 में प्रथम पंचवर्षीय योजना पर चर्चा के दौरान विनोबाजी ने आग्रहपूर्वक गोहत्या बंदी कानून बनाने की बात रखी। सन् 1952 में गोप्रेमी श्री वीर रामचंद्र शर्मा ने आमरण अनशन किया, जो विनोबाजी के प्रयास से छूटा। सन् 1962 में चीन के हमले के बाद देश में आर्थिक संकट पैदा हुआ। इससे निपटने के लिए मांस निर्यात का सुझाव दिया गया, जिसे प्रधानमंत्री लालबहादुर शास्त्री ने अस्वीकार कर दिया। सन् 1969 से भारत से मांस निर्यात प्रारंभ हुआ। विदेशी मुद्रा का लोभ बढ़ने के साथ आधुनिक कत्लखाने भी बनने लगे। सन् 1966 में राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ ने देशभर में गोहत्या बंदी के लिए हस्ताक्षर अभियान चलाया। सन् 1967 में पुरी के शंकराचार्य श्री निरंजन देव तीर्थ ने आमरण उपवास की घोषणा की और दिल्ली में साधु-संतों ने प्रदर्शन किया। श्री शंकराचार्यजी के उपवास के 72वें दिन भारत सरकार ने गोहत्या बंदी लागू करने की पद्धति पर विचार करने के लिए विशेषज्ञों की समिति बनाई। सरकार ने इस कमेटी की सिफारिशों को मानने का वचन दिया। तब श्री शंकराचार्य ने अपना अनशन समाप्त किया। सरकार ने अपने वचन का पालन नहीं किया। सन् 1974 में प्रधानमंत्री श्रीमती इंदिरा गांधी विनोबाजी से पवनार आश्रम में मिली तब विनोबाजी ने उनके समक्ष पुन: गोहत्या बंदी की बात रखी। प्रतिज्ञा और दिए गए वचन से सरकार पीछे हटती गई और गोहत्या की दिशा में आगे बढ़ती गई। तब मई 1976 में विनोबाजी ने जाहिर किया कि देश के सभी राज्यों में सर्वोच्च न्यायालय के निर्णय की मर्यादा में गोरक्षा कानून नहीं बन जाते हैं तो वे स्वयं 11 सितंबर 1976 से आमरण उपवास करेंगे। तब प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी ने वचन दिया कि 31 दिसंबर 1976 तक केरल तथा पश्चिम बंगाल को छोड़कर सारे देश में गोरक्षा कानून बना दिए जाएंगे। केरल तथा बंगाल के लिए उन्होंने एक वर्ष की अवधि मांगी। तब विनोबाजी ने उपवास का निर्णय रोका। दो राज्यों को छोड़कर सभी राज्यों में सर्वोच्च न्यायालय की मर्यादा में गोरक्षा कानून बना दिए गए। जब केरल और बंगाल ने एक साल बाद भी अपना वचन नहीं निभाया तब विनोबाजी ने 22 अप्रैल 1979 से आमरण उपवास का निर्णय किया। यह अनशन पांच दिन चला। पांचवे दिन प्रधानमंत्री मोरारजी देसाई ने संसद में घोषणा की कि संविधान संशोधन कर इस विषय को समवर्ती सूची में ले लिया जाएगा और गोरक्षा का केंद्रीय कानून बना दिया जाएगा। इस पर विनोबाजी ने अपना अनशन छोड़ा। संसद में संविधान संशोधन विधेयक प्रस्तुत किया गया, लेकिन उसी सत्र में अविश्वास प्रस्ताव के कारण सरकार में परिवर्तन हो गया। लोकसभा भंग हो जाने से संशोधन विधेयक पारित नहीं हो सका। सन् 1980 में श्रीमती इंदिरा गांधी के पुन: प्रधानमंत्री बनने पर वचन की याद दिलाई गई, लेकिन उन्होंने पहल नहीं की। अंतत: सन् 1980 में श्री ज्ञानचंदजी महाराज ने दिल्ली में उपवास श्रृंखला चलाई और आमरण उपवास शुरू किया। सरकार ने उन्हें जबरन आहार दिया। विनोबाजी की सूचना के अनुसार उन्होंने अपना उपवास छोड़ा।

दिसम्बर 1981 में पवनार में अखिल भारत गोरक्षा सम्मेलन आयोजित किया गया था। उसमें देशभर से गोप्रेमी और गोसेवक आए थे। सम्मेलन के बाद गोरक्षा कार्य में लगे हुए कुछ सेवकों ने विनोबाजी से चर्चा की। चर्चा के बाद 1 जनवरी 1982 को विनोबाजी ने लिखा, ''किसी भी उम्र के गाय और बैल इस देश में न कटें इस हेतु बम्बई में सत्याग्रह करो। इसका प्रारंभ शांति सैनिक करें।'' विनोबाजी ने अपने आश्रम के अंतेवासी तथा भारतीय शांति सेना के संयोजक श्री अच्युत भाई देशपांडे को देश के 17 सेवकों के साथ बम्बई में सत्याग्रह करने का आदेश दिया। इस प्रकार 11 जनवरी1982 से बम्बई में देवनार स्थित एशिया के सबसे बड़े कतलखाने पर गोरक्षा सत्याग्रह शुरू हुआ। अखण्ड सत्याग्रह के लिए समर्पित श्री अच्युत काका का सत्याग्रह शिविर मुम्बई में ही 14 मई 1998 को देहांत हुआ। आजादी के पहले से लगाकर अब तक न जाने कितने ज्ञात-अज्ञात सेवकों ने गोवंश रक्षा के लिए अपनी आहुति दे दी है। गोरक्षा सत्याग्रह की दो मांग हैं :

1. कृषि प्रधान भारत में किसी भी उम्र के गाय-बैल की कतल पर कानूनी रोक लगाई जाय। इसके लिए केंद्रीय कानून बने तथा

2. भारत से विदेशों में भेजे जाने वाले सभी प्रकार के मांस का निर्यात बंद हो।

सत्याग्रह का स्वरूप अराजनीतिक, असाम्प्रदायिक और अहिंसक है। सत्याग्रह प्रतिरोध के लिए नहीं बल्कि विचार परिवर्तन, हृदय परिवर्तन और परिस्थिति परिवर्तन के लिए है। इसका उद्देश्य नीति परिवर्तन है। वस्तुत: जितनी सज्जनता, शालीनता, सौम्य, सातत्य और समर्पण से देवनार का गोरक्षा सत्याग्रह चल रहा है वह बेमिसाल है। अच्युत काका की भाषा में सत्याग्रह 'एसिड टेस्ट' है। आज के सारे प्रश्न गोरक्षा के प्रश्न में समाये हुए हैं। इसके हल होने पर सर्वोदय समाज की स्थापना की ओर कदम बढ़ेगा।

- डॉ.पुष्पेंद्र दुबे

गोरक्षा

(श्री मोहम्मद युनुसद्दीन फारूखी के साथ साक्षात्कार)

यह साक्षात्कार हमें श्री डेनियल भाई के माध्यम से ई-मेल से मिला है। उनकी अनुमति से इसे यहां प्रकाशित किया जा रहा है। श्री फारूखी नांदेड़ में भू-राजस्व निरीक्षक के पद से सेवानिवृत्त हुए। इसके बाद वे विगत कुछ वर्षो से गोहत्याबंदी आंदोलन में सम्मिलित हुए। उन्होंने सन् 2000 में अपनी नौकरी से स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ली। इसके बाद वे अपना अधिकांश समय गोरक्षण और उसके संवर्धन में दे रहे हैं। वे गोरक्षा के कार्य में लगे हुए सेवकों के साथ निरंतर संवाद बनाए हुए हैं। यहां पर वे अपने कार्य के अनुभव की जानकारी दे रहे हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने गोहत्या के विरोध में आंदोलन क्यों शुरू किया ?

फारूखी : मैं अपने बचपन में गोमांस भक्षण करता था। मैंने यह देखा कि अनेक जगह होने वाले सांप्रदायिक दंगों के मूल में गाय है। मैंने इस मुद्दे को समझने और समस्या के हल के लिए कार्य करना शुरू किया।

प्रश्नकर्ता : आपने गोरक्षा के लिए होने वाले अनेक सम्मेलनों में भाग लिया। आपके क्या अनुभव रहे ?

फारूखी : गोरक्षा के मुद्दे पर अनेक प्रकार के सम्मेलन हो रहे हैं। मैंने माधवाश्रम के शंकराचार्य को भी सुना। मैंने 'अपना गौशाला' नाम से स्वयं की गौशाला प्रारंभ की। गोसेवा के दौरान मैंने अनेक बातें सीखीं। गाय प्रेम करने वाली संवेदनशील प्राणी है। मैंने यह महसूस किया कि गौशाला बिना दान के नहीं चलायी जा सकती। गोमूत्र और गोबर से उपयोगी खाद बनाई जाती है। जब गाय दूध देना बंद कर देती है, तब उसे सम्हालना मुश्किल हो जाता है। मेरे पास गौशाला में 14 गायें हैं। मैं हिंदू रीति-रिवाजों के अनुसार गोपालन करता हूं।

प्रश्नकर्ता : आपने जिन सम्मेलनों में भाग लिया, वे किस प्रकार के थे ?

फारूखी : ये सम्मेलन धनाढ्य स्वयं सेवी संगठनों द्वारा आयोजित किए जाते हैं। इन्हें व्यापारी, मारवाड़ियों से दान प्राप्त होता है। कुछ उद्योगपति भी इस कार्य में सहायता करते हैं। आमतौर पर यह सम्मेलन तीन दिन के होते हैं। इन सम्मेलनों में साधुओं और ब्राह्मणों की भागीदारी अधिक होती है। इनमें महिलाएं भी उपस्थित होती हैं। इस प्रकार के सम्मेलनों में गाय की महिमा का बखान किया जाता है। उसे माता कहकर पुकारा जाता है। यह भी कहा जाता है कि गाय में 33 करोड़ देवी-देवताओं का वास है। प्रतिवर्ष 7 नवंबर को बद्रीनाथ स्थित माधवाश्रम के शंकराचार्य अपना उद्बोधन देते हैं। उनका दिल्ली में आठ एकड़ का आश्रम है। गोरक्षा के लिए जैन धर्मावलंबी भी सम्मेलन आयोजित करते हैं। इसमें रोचक बात यह है कि जैन अन्य जानवरों की रक्षा के लिए सम्मेलन आयोजित नहीं करते हैं। अनेक संगठन यह काम कर रहे हैं। कर्नाटक में हॉस्पेट, शिमोगा में गोशालाओं का बहुत बड़ा नेटवर्क है। इनके आरएसएस से नजदीकी संबंध हैं। अनेक गोशालाएं आरएसएस से जुड़कर काम कर रही हैं। कुछ गांधी विचार के संगठन भी यह काम कर रहे हैं। कुछ सम्मेलनों में आरएसएस छिपे रूप में उपस्थित रहता है। ऐसे सम्मेलनों की संख्या अधिक है। इनमें 20 हजार लोगों तक की उपस्थिति होती है। कुछ सम्मेलनों का स्वरूप अंतर्राष्ट्रीय होता है।

प्रश्नकर्ता : आपकी दृष्टि में गोहत्या कौन कर रहा है ?

फारूखी : मुस्लिम समुदाय के खटिक इस काम में लगे हुए हैं। सम्मेलनों में यह असत्य कई बार कहा जाता है कि मुस्लिमों के आने के बाद गोहत्या प्रारंभ हुई। इन सम्मेलनों में मुस्लिम समुदाय के खिलाफ जहर उगला जाता है। इससे हिंदू वोट बैंक तैयार किए जाते हैं। इन सम्मेलनों में यह खुले रूप में उद्घोषणा की जाती है कि जो गौमाता की पूजा करे और गाय को माता माने उसे ही वोट दिया जाए। इन सम्मेलनों में लगने वाली स्टाल्स से गोरक्षा संबंधी अनेक पुस्तकों और उत्पादों की बिक्री की जाती है। यह सच है कि अफगान गोमांस भक्षण करते हैं। बाबर ने गोहत्याबंदी की सलाह दी। इस्लाम में भी गोमांस खाना फर्ज नहीं है। अकबर के जमाने में जैन मुनियों के कहने पर गोहत्याबंदी का फरमान जारी किया गया और गोहत्या करने वाले को दंड का प्रावधान किया। मुगल शासन में कभी भी गोहत्या को जायज नहीं माना गया। औरंगजेब ने भी इस नीति में बदलाव नहीं किया।

प्रश्नकर्ता : इस नीति में बदलाव कब आया ?

फारूखी : जब अंग्रेज अपने देश में आए तब अंग्रेजी सेना के लिए गोमांस की खपत प्रारंभ हुई। अंग्रेजों ने सेना में गोमांस के लिए खटिकों को नियुक्त किया। इसके बाद मुस्लिम समुदाय में भी गोमांस का चलन बढ़ गया। प्रबुद्ध मुसलमान आज भी गोमांस नहीं

खाता है। यह गरीब मुसलमानों के बीच ज्यादा प्रचलित है।

प्रश्नकर्ता : इस मुद्दे की वैधानिक स्थिति क्या है ?

फारूखी : संत विनोबा भावे ने संविधान के अनुसार गोहत्याबंदी की मांग की। अनेक राज्यों में सन् 1976-77 में पशुरक्षा अधिनियम बनाए गए केवल केरल और बंगाल को छोड़कर। जिन राज्यों ने कानून बनाए वहां गोहत्या प्रतिबंधित है और जो बैल 16 साल के ऊपर के हैं उनका उपयोग मांस उत्पादन के लिए किया जा रहा है। कत्लखानों में बैल और सांडों का कत्ल किया जा रहा है। मुस्लिम और हिंदू व्यापारी पशुओं को पाकिस्तान और बंगलादेश भी भेज रहे हैं। अनेक पशु कतल के लिए केरल और बंगाल भेजे जा रहे हैं। सेना की जरूरतें भी पूरी की जा रही हैं। सैनिकों के जूते के लिए बैल के चमड़े की बजाए गाय का चमड़ा ज्यादा उपयुक्त होता है। भारतीय सेना प्रतिवर्ष जूते के लिए गाय का चमड़ा प्रदाय करने का विज्ञापन निकालती है। अनेक स्थानों पर अवैध कत्लखाने संचालित हो रहे हैं। कश्मीर में आज भी गोहत्या प्रतिबंधित है। वहां गोहत्या करने वाले के लिए 10 साल की सजा का प्रावधान है। दूसरी जगहों पर 3 साल की सजा का प्रावधान है। जब गाय दूध देना बंद कर देती है तब उसे डॉक्टर द्वारा दिए गए प्रमाण पत्र के आधार पर कत्ल कर दिया जाता है। हिंदू समुदाय की अवर्ण जातियाँ गोपालन में लगी हैं। ऊँची जाति के सवर्ण यह कार्य नहीं करते हैं। गौशालाओं को सरकार की ओर से अनुदान दिया जाता है, जिसमें अनेक स्तरों पर भ्रष्टाचार व्याप्त है। कुछ लोग यह दान भावना से देते हैं तो कुछ टैक्स बचाने के लिए दान देते हैं।

प्रश्नकर्ता : गौमांस व्यापार का उद्देश्य क्या है ?

फारूखी : गौमांस में प्रोटीन अधिक होता है। गरीब समाज को प्रोटीन की सख्त आवश्यकता है। खटिक से लगाकर व्यापारी तक सभी विश्व हिंदू परिषद और बजरंग दल से भयभीत हो तनाव में जीते हैं। इन संगठनों के लोग खटिक और व्यापारियों से पैसे वसूल करते हैं। मुस्लिम निर्भय होकर गौमांस खाने की बात स्वीकार करते हैं। खटिकों को इस कठिन काम के लिए बहुत कम राशि दी जाती है। खटिकों के बीच में बालश्रम भी बहुतायत में है। कत्ल की प्रक्रिया के दौरान वे अनेक बार घायल हो जाते हैं। यदि गाय का कत्ल न करें तो वे भोजन प्राप्ति की दूसरी समस्याओं से घिर जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : क्या गौहत्या और सांप्रदायिक हिंसा में कोई संबंध है ?

फारूखी : मैंने गाय के प्रश्न से जुड़ी हुई अनेक प्रकार की हिंसा देखी है। नांदेड़ में एक बार गाय के व्यापारी का जला दिया गया। हिंसा के ऐसे अनेक मामले मौजूद हैं, जहां गाय केंद्र में रही है। औरंगाबाद का 1967-68 का उदाहरण मौजूद है। मुझे यह लगता है कि यदि गौमांस से हिंसा फैलती है तो हमें गौमांस का आग्रह छोड़ना चाहिए। आरएसएस इसे मुद्दा बनाती है। जब एक बार मैं गोविंदभाई श्राफ से मिला तो उन्होंने कहा था कि जब गाय दूध देना बंद कर देती है तो वह पृथ्वी पर भार हो जाती है। अनेक जैन गौमांस निर्यात के व्यापार में लगे हुए हैं। सबरवाल परिवार के अलकबीर कत्लखाने में अंश हैं। अन्य समुदायों के दूसरे कत्लखाने भी हैं।

खादी-सभा 16-17 मार्च को सेवाग्राम में

खादी मिशन के तत्वावधान में खादी-सभा 16-17 मार्च 2013 को सेवाग्राम में आयोजित की गई है। संयोजक बालविजयजी ने बताया कि खादी-सभा 16 मार्च को सुबह 11 बजे प्रारंभ होकर 17 मार्च को दोपहर 1:30 बजे तक चलेगी। इसमें देशभर के कत्तिन, बुनकर, कारीगर, कार्यकर्ता और अन्य खादी प्रेमी सम्मिलित हो सकते हैं। खादी सभा में निम्नलिखित विषयों पर विचार किया जाएगा :

1. खादी रक्षा अभियान की अब तक की जानकारी एवं भविष्य के कार्यक्रम के संबंध में विचार
2. खादी ग्रामोद्योग आयोग/भारत सरकार की खादी ग्रामोद्योग संस्थाओं के प्रति नीतियों-निर्णयों को देखते हुए स्वावलंबन आधारित संस्था कार्य चलाने के संबंध में विचार।
3. खादी मिशन हेतु कार्पस फण्ड एकत्रित करने के संबंध में प्रदेशवार निर्धारित करने के संबंध में विचार।
4. संयोजक के आदेशानुसार अन्य विषयों पर विचार।

इसमें पहुंचने वाले साथीगण अपनी सूचना खादी मिशन के गोपुरी वर्धा स्थित कार्यालय पर भेजें। खादी मिशन के कार्य-संचालन हेतु खादी-सभा के अवसर पर देश की खादी ग्रामोद्योग संस्थाओं की ओर से प्रतिवर्ष आर्थिक सहयोग प्रदान किया जाता है। सहयोग राशि का ड्राफ्ट 'खादी-मिशन सेवा ट्रस्ट' के नाम पर वर्धा के किसी भी बैंक शाखा का भेजें।

गांधी, विनोबा और राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ

- विश्वनाथ टंडन

गुरुजी : एक बार काटजू कैलाशनाथ काटजू हमारे एक समारोह में आए थे तो कांग्रेस वाले नाराज हो गए। एक विवाह समारोह में जिला कांग्रेस के अध्यक्ष आए थे और मैं भी वहां था। सहज ही कुछ बातें भी हुईं। दूसरे दिन अखबार में आया कि उन पर अनुशासनात्मक कार्रवाई क्यों न की जाए ? यह तो राजनीतिक अस्पृश्यता हो गई। यह क्यों होनी चाहिए ?

विनोबाजी : आपके संगठन का नाम राष्ट्रीय स्वयं सेवक संघ है, हिन्दू स्वयं सेवक संघ नहीं। इसलिए आप व्यापक बनें और सब लोग अपनी ओर आएं, ऐसा प्रयत्न करें।

गुरुजी : यह तो हमारा सिद्धांत है ही। हम हर एक से कहते हैं कि आप जो उपासना कर रहे हैं, वही करें हिन्दू का अर्थ है कि इस देश का पुत्र। हम सब एक हैं, यह मंजूर करने में कोई कठिनाई नहीं है। कठिनाई व्यवहार में है। व्यवहार शुद्ध कैसे होगा, यह सवाल है।

एक सज्जन : व्यापकता सूचक कोई अच्छा नाम आप हमारे संगठन के लिए सुझाइये।

विनोबाजी : राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ - राष्ट्रीय दृष्टि से पर्याप्त है। किंतु अब हमें राष्ट्र की व्यापकता बढ़ानी है और विश्व के साथ संबंध जोड़ना है। यह आगे की बात है। वेद में कहीं भी 'भारत' शब्द नहीं मिलता, 'पृथ्वी' शब्द ही मिलता है। सारी पृथ्वी हमारी माता और हम पृथ्वी के यह दृष्टि बननी चाहिए।

गुरुजी : उच्च तत्वज्ञान दूसरी भाषा बोलता ही नहीं। सारी पृथ्वी एक है, यही हम मानते हैं। ऐसा न बोलेंगे तो मानव वंश ही नष्ट हो जायेगा। किंतु यह कलियुग है। पालिटिक्स आया है। कलि का बहुत प्रभाव है। कलि कलह निर्माण करता है।

विनोबाजी : विज्ञान के इस युग में राजनीति कालबाह्य हो गयी है। विज्ञान युग एकता की मांग करता है।

फिर विश्वशांति के प्रश्न पर थोड़ी बातचीत के बाद इस आपस की चर्चा की समाप्ति पर विनोबाजी ने गुरु गोलवलकरजी से कहा, ''आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई।'' यह कोई औपचारिक वाक्य नहीं था। विनोबाजी किसी औपचारिकता के आदी नहीं थे। जो कहते थे वह हृदय से निकलता था।

इसी बातचीत के आधार पर जून 1973 में गोलवलकरजी के निधन पर विनोबाजी का कहना था, ''गोलवलकरजी गुरुजी के लिए मेरे मन में बहुत आदर है। जातीय संकुचित भावना उनमें नहीं थी। अखिल भारत की दृष्टि से वे सोचते थे। अध्यात्म में उनकी श्रद्धा थी। मुस्लिम, ख्रिस्ती आदि भिन्न धर्मो के लिए उनके मन में आदर था। वे इतना ही चाहते थे कि ये सब भारत के प्रवाह से अलग न पड़ें।''

इस कथन से प्रभावित होकर गुरु गोलवलकरजी के बाद सरसंघचालक बने बालासाहेब देवरस ने विनोबाजी को एक पत्र लिखा था, ''परम पूजनीय गुरुजी के निधन पर आपने जो शोक संदेश भेजा, वह पढ़कर सभी स्वयंसेवकों के हृदय गदगद हो गए। उनके बारे में आपने जो भावनाएं व्यक्त की हैं वे एक प्रकार से हमारे लिए मार्गदर्शक ही हैं।

''आपके आशीर्वाद से तथा पूजनीय डॉ. हेडगेवार और परम पूजनीय श्री गुरुजी की शिक्षा से हम उस दिशा में जाने का प्रयत्न करेंगे तथा इस देश में सब प्रकार का ऐक्य निर्माण होकर समाज सुखी बने इसके लिए कार्य खड़ा करेंगे।''

पत्र का अंत इन शब्दों से हुआ था, ''हमारे लिए आपका स्नेह बढ़ता रहे और समय-समय पर आपका मार्गदर्शन प्राप्त हो यह प्रार्थना है।'' बाद में संघ के कुछ प्रमुख व्यक्ति भावी कार्य के लिए विनोबाजी का आशीर्वाद लेने पवनार आए थे। उनसे देवरसजी के पत्र का जिक्र करते हुए विनोबाजी ने कहा था, ''उन्होंने हमें यह जो अभिवचन दे रखा है कि हमारे पत्र में जो निर्दिष्ट वस्तु है उधर वे ध्यान देंगे और उस पर चलने की कोशिश करेंगे, ऐसी कोशिश वे जरूर करें। उसके लिए हमारा आशीर्वाद है।''

गुरु गोलवलकरजी के निधन पर विनोबाजी के शोक संदेश का इस प्रकार असर होना स्वाभाविक था क्योंकि जहां कुछ अन्य लोग तथा विरोधी राजनीतिक दल तरह-तरह से स्वार्थ-वश संघ को बदनाम करने में उतारू रहते थे, विनोबाजी ने उनको सही प्रकार से समझाने का प्रयास किया था और उनके जैसा ही चित्र देश के सामने रखा था। इससे उनके बीच जो नाता बना, वह आगे भी चलता रहा था। आपातकाल में जब देवरसजी जेल में थे, उन्होंने विनोबाजी को कई पत्र लिखे थे जिनकी पहुंच उनको लगातार मिली थी। किंतु लगता है कि केवल पहुंच मिली, उत्तर नहीं मिला था। यह बात समझ में आने

वाली है। पत्रों का विषय आपातकाल ही रहा होगा। विनोबाजी पूरे 1975 के वर्ष मौन में थे। उसके बाद उनका प्रयास था कि उन नजरबंद कार्यकर्ताओं के परिवारों को राहत मिले जिनको एकमात्र उन्हीं का सहारा था, आपातकाल का अंत किया जाए और निर्वाचन कराये जायें। इन प्रयासों की सफलता के लिए गोपनीयता आवश्यक थी। अत: वे प्रयास सार्वजनिक नहीं थे।

जेल से बाहर आने के बाद देवरसजी मार्च 1977 में पवनार आकर विनोबाजी से मिले थे। विनोबाजी ने उस समय उनसे अच्छे मुसलमानों को संघ में प्रवेश देने को कहा था, पर वे यह स्वीकार करते हुए कि मुसलमानों में भी उनके मित्र हैं, सदस्यता के प्रश्न पर मौन रहे थे और विनोबाजी ने भी सिद्धांतत: उन पर उत्तर के लिए दबाव नहीं डाला था। देवरसजी ने विनोबाजी से अगले माह होने वाली तीन दिवसीय संघ के कार्यकर्ताओं की एक सभा के लिए संदेश मांगा था किंतु विनोबाजी ने कुछ माह पहले जो कर्ममुक्ति की घोषणा की थी उसके अंतर्गत वे ऐसा करने के लिए असमर्थ थे। किंतु यह सुझाव उन्होंने जरूर दिया था कि उसमें राजनीति की चर्चा से बचा जाए। अंत में यह एक विवरण है गांधीजी तथा विनोबाजी का संघ के साथ संबंधों तथा उसके प्रति उनकी सोच का। इससे यह स्पष्ट है कि संघ के प्रति उनकी दृष्टि एक-सी थी। वे दोनों ही मुसलमानों की मानसिक दशा से परिचित थे। देश की आजादी के पूर्व कुछ वर्षो में गांधीजी का प्रमुख प्रयास मुसलमानों का हृदय-परिवर्तन करके उनकी मानसिक दशा में परिवर्तन लाना था और आजादी के बाद के काल में पाकिस्तान में हिंदुओं और सिखों के प्रति अत्याचारों के प्रति इस देश के हिंदू और सिखों में उभरी भावनाओं की रोकथाम करना था। इसी में उन्होंने अपने प्राणों की आहुति दी थी और इसके परिणाम स्वरूप मुसलमानों ने उनको अपने मित्र के रूप में पहचाना था तथा हिंदू और सिखों की उभरी भावनाओं पर रोक लगी थी। यदि वह जीवित रहते तो संभावना इसकी थी कि भारत और पाकिस्तान की आपसी कटुता बहुत सीमा तक दूर हो गयी होती।

विनोबाजी को उस आपसी तीव्र कटुता का सामना नहीं करना पड़ा जो गांधीजी को करना पड़ा था, पर उनका प्रयास भी हिंदू तथा मुसलमान दोनों को समझा-बुझाकर भी एक-दूसरे के निकट लाने का था। वे हृदय परिवर्तन और मानस परिवर्तन की बात करते थे। गांधीजी का कहना था कि बुरे से बुरे व्यक्ति के हृदय में कुछ तार ऐसे होते हैं जिनको हम यदि ठीक प्रकार झंकृत कर सकें तो संगीत फूट निकलेगा। उनका यह भी कहना था कि ''यदि आप विरोधी का हृदय परिवर्तन करना चाहते हैं तो आप उसके शुभतर और उदात्ततर पक्ष पर और उनसे संबद्ध बातों पर जोर देते रहिए। उसकी त्रुटियां सामने मत रखिये।'' विनोबाजी का भी ऐसा ही मत था। वे कहते थे कि एक मां अपने बच्चे के गुणों का ही बखान करती है, दोषों का नहीं। वह मानती है कि दोष एक दिन दूर हो जाएंगे। उनके अनुसार मनुष्य का जीवन एक मकान की तरह है, दीवारें उसके दोष हैं, दरवाजे सद्गुण हैं। हम उसमें दरवाजों से ही प्रवेश कर सकते हैं दीवारों से नहीं। उनके प्रवचनों को यदि देखा जाए तो उनके इस दिशा में प्रयासों का पता लगता है। उनके चिंतन में एक संतुलन भी है जो उनको हिन्दू-मुसलमान दोनों का मित्र जताता है। यह दुर्भाग्य की बात है कि आज के राजनीतिक दलों ने जो मार्ग अपनाया है वह या तो मुसलमानों को लाड़-प्यार से बिगाड़ने का है या फिर अनुचित दमन का। आवश्यकता इन दोनों से बाहर निकलकर समझाने-बुझाने तथा न्यायपूर्ण व्यवहार की है। समाप्त (गांधीजी यदि पाकिस्तान जा पाते तथा अन्य लेख से)

पावित्र्य रक्षा का मुख्य काम

इन्दौर में गंदे चित्रों के खिलाफ आवाज उठाने का काम बहनों को ही करना चाहिए। यह सब मैं इसलिए बोल रहा हूं कि समाज की जड़ें उखाड़ी जा रही हैं। जहां सारे तरुणों का चित्त केवल विषय-वासना में होगा, वहां समाज की बुनियाद ही उखड़ा जाएगी। इसलिए बहनों पर पावित्र्य रक्षा की जिम्मेदारी है। झगड़ों को रोकना स्थूल कार्य है। बहनों का मुख्य कार्य समाज में पावित्र्य रक्षा का हो। यह बहनें करें तो समाज बचेगा। अन्यथा उत्तरोत्तर गड्ढे में जाएगा। फिर हम कितनी भी कोशिश करें, तो भी शांति नहीं रह सकेगी।

स्वास्थ्य समाचार

सर्वोदय सेवक और गोविभा के संपादक श्री नरेंद्र दुबे का स्वास्थ्य ठीक है। नित्य-नैमित्तिक कर्मो को वे सुचारु रूप से कर रहे हैं। अपनी संकेत भाषा में वे अपनी बात समझाते हैं। विगत दिनों डॉ.आदर्श त्रिवेदी और डॉ.सोनाली त्रिवेदी इन्दौर आए थे। वे बेटी-दामाद हैं। उन्होंने चिकित्सा में कुछ तब्दीली की है। जनवरी माह की मैत्री को उन्होंने काफी ध्यान से पढ़ा। खादी ग्रामोद्योग क्षेत्र की चिंताजनक हालत बताने पर वे गंभीर हो जाते हैं। इशारों में ही वे यह बताने का प्रयास करते हैं कि खादी ग्रामोद्योग आयोग से मुक्ति के बिना खादी का उद्धार नहीं होगा।

प्रेरक कहानियाँ

ऐसी करनी कर चलो

यहूदी संत सिम्शा बुनेन के पड़ोस में एक दुराचारी व्यक्ति रहता था। उसकी बुरी आदतों को देख उन्हें बड़ा दु:ख होता। वह व्यक्ति शतरंज का शौकीन था। एक दिन बुनेन ने उसे शतरंज खेलने के लिए बुलाया। खेल के दौरान उन्होंने जानबूझकर गलत चाल चली। जब वह व्यक्ति उनके मोहरे को मारने लगा, तो 'माफ कीजिए' कहकर वे मोहरे को वापस लेने लगे। उस आदमी ने कोई आपत्ति नहीं की और चाल वापस लेने दी। थोड़ी देर बाद बुनेन ने पुन: गलत चाल चली और माफी मांगते हुए अपनी चाल वापस लेनी चाही। लेकिन इस बार वह व्यक्ति नाराज हो गया और बोला, ''मैंने एक बार मोहरा वापस लेने क्या दिया कि आप तो बार-बार चाल वापस लेना चाहते हैं। इस बार मैं चाल वापस नहीं लेने दूंगा।'' तब सिम्शा ने हंसकर उससे कहा, ''भाई, तुम खेल में मेरी दो गलत चालों को नजरअंदाज करने को राजी नहीं हो, लेकिन अपनी जिंदगी में गलत चाल चलकर चाहते हो कि खुदा उन्हें नजरअंदाज करता रहे। लेकिन ध्यान रखो गलत चालों का अंजाम कभी अच्छा नहीं होता, इसलिए यदि हमें दुनिया में रहना है तो बुरे कर्मो का त्याग कर स्वयं को अच्छे कामों में ही लगाना चाहिए।''

सेवा की कीमत मत आंको

एक बार संत जुनैद हजामत बनवाने के लिए नाई के पास गये। उस समय वह एक धनी ग्राहक की हजामत बना रहा था। संत जुनैद ने सोचा कि यह नाई शायद केवल अमीर लोगों की ही हजामत बनाता होगा, इसलिए उन्होंने उससे नम्रता से पूछा, ''क्या आप मेरी हजामत बनाएंगे?'' बेशक - कहते हुए नाई ने उस धनी व्यक्ति की हजामत को बीच में ही छोड़कर उनकी हजामत बनाना शुरू किया। बाद में जब संत उसे पैसे देने लगे, तो नाई ने कहा, ''यह रख लीजिए और मेरी ओर से भेंट समझिए।'' और वह पहले ग्राहक की हजामत बनाने लगा। संत ने पैसे तो वापस रख लिये, मगर मन ही मन निश्चय किया कि उन्हें सबसे पहले जो कुछ दान में मिलेगा, वह वे इस नाई को दे देंगे।

जब थोड़ी देर बाद उनका एक भक्त अशर्फियों से भरी थैली लेकर उनके पास आया, तब थैली लेकर वे नाई के पास आये और बोले, ''लो, मेरी ओर से यह भेंट रख लो।'' नाई ने जो सुना, नाराज हो उन पर बरस पड़ा, ''आप भी बड़े विचित्र हैं। मैंने भगवान की सेवा समझकर जो काम किया था, उसे आप ग्रहण नहीं करना चाहते और मुझे ही भेंट देकर खुद गलत काम कर रहे हैं और मेरे नेक काम को झुठलाना चाहते हैं!'' यह सुन संत जुनैद शर्मिंदा हुए और चुपचाप वहां से चले गये।

इन चित्रों से बच्चों को बचाइये

- विनोबा

बच्चे पूछेंगे, यह इश्तहार क्या है ?

शहरों में बड़े-बड़े इश्तहार लगे रहते हैं, उनका बच्चों पर असर होता है। वे सहज ही पूछ लेते हैं कि यह क्या है? बच्चों पर ज्यादा असर बाहर जो रूप वह देखता है, उसका होता है। खाने बैठता है और चिड़िया उड़ रही है, तो उसका ध्यान फौरन चिड़ियों की तरफ जाएगा, भूख लगी है, खाना मीठा भी लग रहा है, फिर भी चिड़िया को उड़ते देखकर उसका ध्यान फौरन उसकी तरफ आकर्षित हो गया। वैसे ही बाहर यदि वह कोई भी स्वरूप देखता है, तो उस ओर आकर्षित होता है। वह आपसे पूछेगा, यह 'हनीमून' क्या है ? यह चित्र किस चीज का है? उसके दिमाग पर देखने का असर होता है।

इसलिए इन्दौर के नागरिकों को चाहिए कि वे इस बारे में सोचें। मकानवाले अपने मकान पर बड़े-बड़े अक्षरों में इश्तहार लगने देते हैं, तरह-तरह की तसवीरें लगाने देते हैं। उसके लिए उनको पैसे मिलते होंगे, लेकिन यह पैसा विनाश करने वाला पैसा है। ....

अभी हमने खबरें पढ़ीं कि अहमदाबाद, नागपुर जैसे शहरों से शिकायत आती है कि लड़के लड़कियों के पीछे लगते हैं। इसके कई कारण हैं। सिनेमा और गंदा साहित्य भी इसके कारण है। मनुष्य की उम्र बढ़ती जा रही है, आगे क्या करना है, यह किसी को सूझ नहीं रहा है। इस पर जब मैंने सोचा, तो ध्यान में आया कि कभी यह नौबत न आ जाय, जब कि लड़कियों को केवल घर में ही बैठने का प्रसंग आए, उस समय मैं यह पसंद करूंगा कि उन्हें शस्त्र दिये जाएं। मेरा शस्त्रों पर विश्वास नहीं है। अंदरुनी आत्मशक्ति पर ही विश्वास है। लड़कियां सादगी से रहें, आकर्षक वेश न हो, दृष्टि में वैराग्य हो, चंचलता न हो, तो सामने वाले की हिम्मत न होगी कि वह अतिप्रसंग करे। लेकिन फिर भी ऐसा प्रसंग आए, तो लड़कियां खंजर रख सकती हैं। पर ये सारे उपर-उपर के उपाय हैं। अंदर के उपाय तो चित्त-शुद्धि, नजर की शुद्धि का है। वह ब्रह्मविद्या के बिना संभव नहीं। ब्रह्मविद्या के मानी विद्वान बनना नहीं है। बहनों को सोचना चाहिए कि अपना कर्तव्य क्या है। अपना शरीर किस काम के लिए है। संतान-निर्मिति को कर्तव्य माना जाय, तो उसमें सुख, आनंद थोड़ा होता है और दु:ख अधिक। माँ को नौ महीने तक बच्चे को पेट में रखना पड़ता है। उसमें जो टार्चर होता है, वह मेरे लिए तो असह्य है। मैं सोचता हूं कि मैं अगर बहन होता और मुझे दो बच्चे होते, तो भूदान आंदोलन संभव न होता। हम अपने शरीर का पावित्र्य नहीं गंवाने देंगी, ऐसी तीव्र भावना बहनों में पैदा होनी चाहिए। अविवाहित और विवाहित दोनों किस्म की बहनों में यह भावना पैदा होनी चाहिए।

रजि. MPHIN/2003/11246 Postal Reg. ICD. (MP) 1106/2012-14

गोविभा 20 जनवरी, 2013

अच्युत काका के पत्र

श्री.....

मैंने ये पहले से ही माना है कि एक हो या अनेक जब तक मोर्चे पर वे डटे हैं, सत्याग्रह जारी ही है। आपने लिखा दिल्ली के 'शुद्धि आंदोलन' जैसी उपेक्षा इसकी न हो। इस संकेत ने सब लोगों में जोश भर दिया है। परंतु मेरे मन में इस सत्याग्रह का स्वरूप ही दूसरा है। इसमें डटे रहना भी महत्वपूर्ण होगा। अधिक लोग, जनजागरण, चेतना, प्रचार, प्रसार, हलचल ये सभी बातें आवश्यक हैं हीं, परंतु हमारा परमात्मा हमारी पूरी मदद करेगा, यह विश्वास भी हमारे काम आएगा। सब ओर सद्प्रवृत्ति जागेगी, कई स्थानों से सहायता हमें मिलती रहेगी, ऐसे आसार दीख रहे हैं। सत्य, प्रेम, करुणा, सबसे मैत्री की दृष्टि रखने वाले सभी हमारे साथी हों, ऐसी हमारी चाह है। देखें क्या परिणाम आता है। 19-1-82

पूज्य....

यहां का काम भगवान की पालकी है। सभी के हाथ उसमें लगते हैं। सभी का अच्छा मशविरा काम करने में शामिल है। मशविरा जो भी दिया गया, अच्छा ही माना गया, अच्छा ही था। अब मालूम हुआ है कि आप कुछ नयी सूचनाएं हमें करेंगे और संचालन में कुछ फरक करना चाहते हैं। मुझे ऐसा मालूम कराया गया है। 5-4-82

पूज्य...

बिहार से तीन मुसलमान भाई सत्याग्रह के लिए आए हैं। रोज सत्याग्रह के लिए जाते हैं। उनमें से एक भाई एक दिन कतलखाने से दस-बीस कदम ही दूर एक मसजिद है। वहां नमाज पढ़ने गये। पचास साठ लोग नमाज पढ़ने वाले थे। नमाज के बाद इमाम ने इन भाई से - मंसूरी से - कहा मुसलमानों को गोश्त खाने की मनाही करने आए हो? मंसूरी ने कहा, गाय बैल का गोश्त खाने से मुसलमान, मुसलमान है, वरना नहीं है? गोश्त खाने से हम आपको मना कहां कर रहे हैं। बकरा-बकरी है, भैंस-भैंसा है, उनका खाओ। यहां अच्छे बैल कटते हैं। देश का कानून टूट रहा है। किसानों को बैल नहीं मिल रहे हैं। सब जनता इसकी मांग कर रही है। उसके खिलाफ जाना अच्छा है क्या? मेरे गांव में मुसलमानों के चार ही घर हैं। सब हिंदुओं से हमारा प्रेम है। वे चाहते हैं गाय-बैल न काटे जायें उतना मान लें तो प्रेम बनेगा कि नहीं। जनता से प्रेम बना रहने में ही भलाई है। सारी जनता चाहती है उस बात की मुखालिफत करना सयानापन है? हजरत मुहम्मद साहब ने कहा है, जहां भी रहते हो, प्रेम से रहो।

वरिष्ठ गोसेवक श्री बृजमोहन शर्मा का निधन

स्वतंत्रता सेनानी और वरिष्ठ गोसेवक श्री बृजमोहन शर्मा का 99 वर्ष की आयु में निधन हो गया। भारत के आजाद होने के बाद वे संत विनोबा के सान्निध्य में आए। भूदान-ग्रामदान के बाद श्री शर्माजी ने अपना पूरा जीवन गोरक्षा के लिए लगाया। उनके जीवन को तब निकटता से देखने का अवसर मिला जब वे कुछ समय के लिए इन्दौर आए। रात के ठीक आठ बजे सोना और सुबह तीन बजे उठना, ठण्ठे पानी से स्नान करना, रात्रि भोजन त्याग और गोव्रत का पालन उनकी दिनचर्या थी। ऐसा कभी नहीं लगा कि उन्होंने गाय के अलावा कोई और चिंतन किया हो। उन्होंने नम्रतापूर्वक स्वीकार करते हुए 'क्षमायाचना' पुस्तक लिखी। उन्हें गोवंशरक्षा की तीव्र आकांक्षा थी। मुम्बई के देवनार कत्लखाने के सामने सत्याग्रह करना हो अथवा दिल्ली के जंतरमंतर पर बैठना हो। वे सदैव अग्रणी सिपाही की भूमिका में रहे। ऐसे तप:पूत यशस्वी श्री शर्मा जी को 'गोविभा' परिवार की ओर से हार्दिक श्रद्धांजलि।

प्रकाशक :
नरेन्द्र दुबे, कार्याध्यक्ष, गोविज्ञान भारती
द्वारा मुंबई सर्वोदय मण्डल, 299, ताड़देव रोड, नानाचौक
मुंबई-400 007, फोन : (022) 23872061

डी-37, सुदामा नगर, इन्दौर-452 009
फोन : 0731-2489475, मो.: 97542 20781
www.govigyan.org ● e-mail : vinobaji1@gmail.com
prof.pushpendra@gmail.com

मुद्रण : श्रीकृति ग्राफिक्स, बी-133, सुदामानगर, इन्दौर
मो.: 98269 51703

वार्षिक शुल्क : रु. 50 एक प्रति : रु. 5

गोविभा

रजि. MPHIN/2003/11246
पोस्टल रजि.आई.सी.डी. (एम.पी.) 1106/12-14

सेवा में,

_____

_____